विजयदान देथा की लोक कहानियों में कहन शैली का अध्ययन

(बातां री फुलवाड़ी के प्रथम छः खण्डों के विशेष सन्दर्भ में)

दयालबाग एजुकेषनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा की पी–एच.डी. (हिन्दी)
की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा एवं उद्देष्य

2014

निर्देशिका

डॉ० (श्रीमती) सुमन शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर

शोधार्थिनी

श्रीमती सुनीला छापर

हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–282110

विजयदान देथा की लोक कहानियों में कहन शैली का अध्ययन

(बातां री फुलवाड़ी के प्रथम छः खण्डों के विशेष सन्दर्भ में)

हिन्दी की पाँच उपभाषाओं में से राजस्थानी भाषा भी एक है। जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। राजस्थानी भाषा की आठ बोलियाँ हैं—पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी), पूर्वी राजस्थानी जयपुर (ढूढ़ाड़ी), उत्तरी राजस्थानी (मेवाती), दक्षिणी राजस्थानी (मालवी), मेवाड़ी (मेवाड़ जनपद), हाड़ौती (हड़ौती जनपद), बागड़ी (बांसवाड़ा/डूंगरपुर), शेखावाटी (सीकर, चूरु, झुंझनू)। राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य मारवाड़ी के साहित्यिक रूप डिंगल में लिखा गया है। यह नागरी लिपि में लिखी जाती है।

डॉ० नगेन्द्र के अनुसार— राजस्थानी का 'बात साहित्य' प्रसिद्ध है। यह आधुनिक कहानी के निकट की कथात्मक विधा है। गद्यात्मक बातों के साथ गद्य पद्यमय बातें भी प्राप्त होती है। ऐतिहासिकता की दृष्टि से बात साहित्य तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—ऐतिहासिक, अर्ध—ऐतिहासिक, काल्पनिक। बातों को घटना प्रधान, व्यक्तिपरक, वर्णनपरक, विचारपूर्ण इन चार वर्गों में विभक्त किया गया है। कुछ प्रसिद्ध बातें है—'रतना हमीर री बात', 'राव अमर सिंह री बात', 'सिद्ध राजसिंहदे री बात', 'राव रिणमल री बात', 'सयणी चारणी री बात', 'ढोला मारवाणी री बात', 'गोरा बदल री बात', 'बात दूधै जोधावतरी', 'राजा भोजराज खापरा चोर री बात', वीरबल री बात। 'वारता' शीर्षक से भी इस प्रकार की रचनाएँ प्राप्त होती है।

बातों, 'वार्ता' शीर्षक कथात्मक रचनाओं और ख्यालों के अतिरिक्त इस समय के राजस्थानी गद्य की प्रमुख विधाएँ है— वचनिका (गद्य—पद्य में कथा और वर्णन), वर्णन दैवावैत (कथा और वर्णन), सलोका, पत्र, वंशावली, पट्टावली, विगत पीढ़ी। पिछले चार प्रायः अललित और ख्यात के समान इतिहास विषयक है। शेष विधाएँ ललित है और उनमें (बातों, वार्ताओं को छोड़कर) शुद्ध गद्य के साथ सानुप्रास (तुकमय) गद्य भी प्रचुरता में प्रयुक्त है। कुछ बातों और वार्ताओं में भी तुकमय गद्य का दर्शन होता है। इस समय

के अमौलिक (व्याख्या–अनुवाद रूपों) गद्य रूपों में बालाव बोध, टीका–टिप्पण और 'भाषा' प्रमुख है। विषय है–इतिहास धर्म, अध्यात्म, कोकशास्त्र, शकुन, सामुद्रिक, ज्योतिष, वैद्यक, यन्त्र, तन्त्र, नीति, गणित।

राजस्थान का लोक साहित्य एवं संस्कृति समृद्ध है। यह साहित्य प्राचीन काल से विभिन्न रूपों में जनमानस का कण्ठाहार बना हुआ है। राजस्थान का लोक साहित्य, लोक गीत, ख्याल, लोक वार्ताएँ, लोकोक्ति, पहेलियां आदि अनेक रूपों में मिलता है। मध्यकालीन धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराएँ इस संस्कृति को और भी जीवन्त बनाती रही है। यहाँ अनेक मेले एवं त्यौहार आयोजित होते रहते हैं। यहाँ वर्षा ऋतु, फाल्गुन मास तथा शादी–ब्याह के उत्सव, तीज–त्यौहारों आदि के अवसर पर अनेक तरह के लोक गीत गाये जाते हैं और जनसमाज अपने जीवन को हर्षोल्लासमय बनाते रहते है। वृद्धजन द्वारा कही जाने वाली ज्ञानात्मक एवं उपदेशात्मक लोक कथाएँ यहाँ के जीवन को सँवारती रही है। इसी तरह वीरों की गाथाएँ और अनेक तरह के ख्याल विभिन्न अवसरों पर लोक कलाकारों के द्वारा गाये और लोक नाट्य मंचित किये जाते है। यहाँ बात–बात में मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग कर लोग अपनी बात को बड़े अनूठे ढंग से कहते है। इस प्रकार सम्पूर्ण रूप से देखा जाए तो राजस्थान का लोक–साहित्य बहुत ही लोकप्रिय और जन चेतना का वाहक रहा है।

अन्य अनेक विधाओं की तरह राजस्थान में लोक कथाएँ और वार्ताएँ बहुत लोकप्रिय रही है। प्राचीन देवी–देवता, समाज को दिशा देने वाले वीर पुरुष तथा लोक देवता यथा गोगा जी, पाबू जी, रामदेव जी आदि के अतिरिक्त अनेक वीरागंनाओं से सम्बन्धित लोक कथाएँ यहाँ प्रचलित है जो जनमानस को सदा प्रेरित ही नहीं करती बल्कि समयानुकूल नई दिशा दिखाती है।

इन ऐतिहासिक और पौराणिक लोक गाथाओं की तरह ही राजस्थानी समाज की मानसिकता को अंकित करने वाली अनेक लोक कथाएँ राजस्थान में प्रचलित है। यह लोक कथाएँ लोक द्वारा समयानुकूल परिवर्तित भी होती रहती है। ऐसी लोक कथाओं में

राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारी, चतुर बनिया, साहूकार, चोर डकैत, किसान तथा विभिन्न जातियों से सम्बन्धित लोग पशु–पक्षी, पेड़ पौधे आदि न जाने कितने ही विषयों को समेटते हुए यह कहानियाँ जनमानस में प्रचलित रही है। बड़े–बूढ़े, बच्चे तथा स्त्रियाँ भी शामिल होकर इन कथाओं को सुनते है, मनोरंजन एवं ज्ञानार्जन करते है। इस प्रकार से यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि राजस्थान विश्व में लोक कथाओं का अखूट खजाना है।

राजस्थान के जनमानस में प्रचलित इन विविध लोक कथाओं का अपनी भाषा और शैली में राजस्थानी के कथाकार विजयदान देथा ने न केवल लोककथाओं का संग्रह और सम्पादन का कार्य किया बल्कि पुनर्सजृन का कार्य भी किया है। विजयदान देथा ने राजस्थान और विशेष रूप से पश्चिमी राजस्थान के मारवाड़ अंचल में प्रचलित सदियों से जनमानस को उद्वेलित और प्रेरित करने वाली ऐसी अनेक लोक कथाओं को लोगों के पास जा जाकर सुना, उन्हें संकलित किया और फिर अपनी भाषा और शैली में उनको नये रूप में प्रस्तुत किया। एक प्रकार से यह भी कहा जा सकता है कि ये लोक कथाएँ होते हुए भी विजयदान देथा की पुनर्सजना शैली से और भी प्राणवान एवं सजीव हो उठी हैं। विजयदान देथा ने इन्हें अपनी शैली में प्रस्तुत कर इनको लोक साहित्य की अमर निधि बना दिया है। विजयदान देथा ने 'बातां री फुलवाड़ी' के कुल 14 भगों में ऐसी लोक कथाओं को प्रस्तुत किया है जिनकी संख्या सैकड़ों है।

विजयदान देथा का जीवन परिचय– विजयदान देथा का जन्म 1 सितम्बर 1926 को जोधपुर जिले के बोरूंदा गाँव में हुआ। इन्हें 'बिज्जी' नाम से भी जाना जाता है। इनके पिता का नाम सबलदान देथा व माता का नाम सिरुकंवर देथा था। 1950 में सॉयर कंवर से इनका विवाह हुआ। सुशिक्षित एक ऐसे परिवार में इनका जन्म हुआ जहाँ काव्य की परम्परा पीढ़ियों से विद्यमान थी। विजयदान देथा की प्रारम्भिक शिक्षा जैतारण (पाली जिला) में हुई, उसके बाद बाड़मेर में शिक्षा प्राप्त की। जोधपुर की जसवन्त कॉलेज से बी.ए. हिन्दी तथा एम.ए. पूर्वाद्ध हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की। देथा सादगी,

सरलता और मन की विशालता से सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। देथा दृढ़निश्चय रखने वाले कर्मठ व्यक्ति थे देथा को लिखने की प्रेरणा अपने पिता से मिली।

देथा ने सर्वप्रथम कविताओं से लेखन कार्य प्रारम्भ किया लेकिन बाद में ''बातां री फुलवाड़ी'' के 14 भागों का राजस्थानी भाषा में पुनर्लेखन किया तथा इन 14 भागों में देथा ने लोक कथाओं (दंत कथाओं) को अपनी शैली विशेष में लिखकर संकलित किया। इन लोक कथाओं के माध्यम से देथा ने आंचलिक जीवन और सामाजिक मूल्यों तथा स्थितियों का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया।

इनके अतिरिक्त दुविधा, सपनप्रिया, उलझन, दोहरी जिन्दगी, लजवन्ती, उजाले के मुसाहिब, अलेखू हिटलर, त्रिवेणी, प्रतिशोध (कहानी संग्रह) तथा महामिलन (उपन्यास) हिन्दी में लिखे है।

विजयदान देथा की लोक कहानियाँ अपनी विषय–वस्तु, जीवनबोध, भाषा और शैली सभी दृष्टियों से अनूठी है। लेखक ने न जाने कितने ही पक्षों पर मार्मिक कथाएँ प्रस्तुत कर युग के जीवन मूल्यों को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत किया है। 'बातां री फुलवाड़ी' में लेखक ने विविध वर्गों के पात्रों के जीवन की विभिन्न घटनाएँ एवं तत्कालीन समाज के मानव मूल्यों को प्रतिष्ठित करने वाली बातें और अनेक चरित्र प्रस्तुत किये है। जिनमें हम अपने समाज की वास्तविक झांकी प्राप्त कर सकते है। विजयदान देथा की कथा शैली विशिष्ट है, जिसमें लेखक किसी भी विषय को उठाकर उसे एक ऐसे सांचे में ढाल देता है कि पूरी कहानी में निहित संदेश उसकी चरित्र सृष्टि उसकी भाषिक संरचना और बात बनाने का ढंग हमें आकर्षित ही नही करता बल्कि व्यक्ति एवं समाज की एक छवि हमारे मानस पटल पर अंकित कर देता है। श्री देथा शब्दों के कारीगर है वे बात बात में लोकोक्तियों मुहावरों आदि का प्रयोग कर पात्र और घटनाओं के माध्यम से कथा को इस रूप में गूँथते (बांधते) है कि पाठक अथवा श्रोता न केवल चकित रह जाता है बल्कि इस कहानी को बार–बार पढ़ना चाहता है। इस तरह देखा जाए तो इन कहानियों के मौलिक सृजनकर्ता देथा भले ही न हो लेकिन अपने द्वारा संग्रहित इन लोक कथाओं को इन्होंने

जो रूप प्रदान किया और अपनी भाषा शैली से सींचकर जन जन तक पहुँचाया है वह कार्य किसी मौलिक रचनाकार से किसी भी स्तर पर कम नहीं है। इस तरह विजयदान देथा की लोक कथाओं का जो शिल्प है वह अपने आप में विशिष्ट और पूरे भारतीय साहित्य में निराला है।

प्रस्तुत शोध में विजयदान देथा के कथा शिल्प के कौशल की बारिकियों और उसके वैविध्य को समझने का प्रयास किया जाएगा। देथा लोक कहानियों के संग्रहकर्ता ही नहीं बल्कि एक मौलिक सर्जनकर्ता है और उन्होंने अपनी भाषा और शैली में कहानियों का ताना–बाना बड़े कौशल के साथ बुना है।

विजयदान देथा की कथा शैली के अनेक रूप है। कहीं उनकी कहानी कहने की शैली सीधी–सादी होती है जिसमें वे एक कथा का विस्तार चरित्रों के माध्यम से कर देते है। उनकी कहानियों में लोक साहित्य में प्रचलित अनेक शैलियाँ देखी जा सकती है– बात बणाव, हुंकारा पद्धति, रंग शैली, छोगा प्रधान शैली आदि के प्रयोग उनकी कहानियों को विशिष्ट रूप प्रदान करते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में विजयदान देथा की लोक कहानियों की विषय–वस्तु, चरित्र सृष्टि, परिवेश भाषा और शिल्प की दृष्टि से विस्तृत अध्ययन किया जाएगा और यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार देथा की 'कहन शैली' अपने रंग रूप में सँवरकर विकसित हुई और उन्हें एक महान कथा शिल्पी बना देती है।

इस शोध कार्य को देथा की लोक कहानियों के व्यापक अध्ययन एवं विश्लेषण के माध्यम से सम्पन्न किया जाएगा। इस शोध को प्रस्तुत करने के लिए राजस्थानी संस्कृति और लोक मानस को भी समझने का प्रयास किया जाएगा। इस तरह से एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति से इस शोध कार्य को पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। विजयदान देथा के कथा शिल्प में उपदेशात्मक, विश्लेषणात्मक, चित्रात्मक, संकेतात्मक, मनोवैज्ञानिक, किस्सागोई, हुँकारा पद्धति, छोगा प्रधान पद्धति, प्रत्यक्ष या

सहज शैली आदि विभिन्न शैलियों को समझने का प्रयत्न किया जाएगा। आवश्यकतानुसार लोकतात्विक, भाषा तात्विक, सामाजिक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक आदि विभिन्न शोध पद्धतियों का अवसरानुसार इस शोध कार्य में उपयोग किया जाएगा, जिससे यह शोध कार्य एक प्रमाणिक आधार ग्रहण कर सकें।

साहित्य सर्वेक्षण में शोध विषय से सम्बन्धित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है। जिनका विवरण निम्नवत् है–

1. विजयदान देथा के कथा साहित्य में नारी–2001 जे.एन.वी.युनिवर्सिटी.जोधपुर
2. विजयदान देथा के कथा साहित्य में लोक जीवन – 2011 डी.यू दिल्ली
3. विजयदान देथा के कथा साहित्य के हिन्दी अनुवाद का भाषिक और सांस्कृतिक विश्लेषण – 2012 जे.एन.यू. दिल्ली
4. विजयदान देथा के कथा साहित्य में लोक व संस्कृति –2013 वनस्थली विद्यापीठ जिला टोंक

शोधार्थिनी

सुनीला छापर

विजयदान देथा की लोक कहानियों में कहन शैली का अध्ययन
(बातां री फुलवाड़ी के प्रथम छः खण्डों के विशेष सन्दर्भ में)

प्रथम अध्याय

❖ साहित्य का सर्वेक्षण : पूर्ववर्ती कार्य, मौलिकता और महत्व

1.1 विजयदान देथा के कथा साहित्य में नारी – शोध प्रबन्ध

1.2 विजयदान देथा के कथा साहित्य में लोक जीवन – शोध प्रबन्ध

1.3 विजयदान देथा के कथा साहित्य के हिन्दी अनुवाद का भाषिक और सांस्कृतिक विश्लेषण – शोध प्रबन्ध

1.4 विजयदान देथा : लोक एवं संस्कृति – शोध प्रबन्ध

1.5 शोध पद्धतियाँ

1.5.1 लोक तात्विक शोध पद्धति

1.5.2 ऐतिहासिक शोध पद्धति

1.5.3 मनोवैज्ञानिक शोध पद्धति

1.5.4 भाषा तात्विक शोध पद्धति

1.5.5 तुलनात्मक शोध पद्धति

1.5.6 सामाजिक शोध पद्धति

द्वितीय अध्याय

❖ लोक कहानियों का अर्थ, स्वरूप

2.1 राजस्थानी लोक कहानियों का स्वरूप व परिचय

2.2 राजस्थानी लोक कहानियों का वर्गीकरण

2.3 विजयदान देथा द्वारा संग्रहीत पुनर्सृजित लोक कहानियों का परिचय

तृतीय अध्याय

❖ राजस्थानी लोक कहानियों में कहन शैली : अर्थ परम्परा एवं विकास

3.1 शैली का अर्थ, शैली के विभिन्न रूप

3.2 कहन शैली का लोक कहानियों में महत्व

3.3 लोक कहानियों में कहन शैली के तत्व

3.4 कहन शैली की प्राचीन परम्परा व विकास

3.5 कहन शैली की मध्यकालीन परम्परा व विकास

3.6 कहन शैली की वर्तमान परम्परा व विकास

3.7 प्रमुख कहन शैलियां– किस्सागोई, हुंकारा पद्धति, छोगा प्रधान शैली, सहज या प्रत्यक्ष शैली आदि

चतुर्थ अध्याय

❖ विजयदान देथा की लोक कहानियों में कहन शैली

4.1 विजयदान देथा की लोक कहानियों की संरचना

4.1.1 कहानी का आरम्भ

4.1.2 कहानी का मोड़

4.1.3 कहानी का उतार–चढ़ाव

4.1.4 कहानी का अन्त

4.2 बातां री फुलवाड़ी : एक विश्लेषण

4.2.1 संकलन

4.2.2 वर्गीकरण

4.2.3 परिवेश

4.2.4 पात्र एवं संवेदना

4.2.5 कहन शैली

4.2.5.1 लोक कहानियां में पारम्परिक कहन शैली

4.2.5.2 छोगा प्रधान शैली

4.2.5.3 हुंकारा पद्धति

4.2.5.4 किस्सागोई

4.2.5.5 अन्य

पंचम अध्याय

❖ विजयदान देथा की लोक कहानियों का भाषिक विश्लेषण

5.1 लोक कहानियों पर राजस्थानी भाषा का प्रभाव

5.2 राजस्थानी भाषा की शब्द रचना, वाक्य रचना

5.3 मुहावरे, लोकोक्ति, सूक्तियाँ

5.4 प्रतीक एवं बिम्ब

5.5 प्रकृति वर्णन

5.6 चित्रात्मक भाषा

उपसंहार

परिशिष्ट

1. विजयदान देथा : एक परिचय
2. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ सूची

सहायक ग्रन्थ सूची

पत्र–पत्रिकाएँ

शब्दकोश सूची

वेबसाइट

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ	लेखक	प्रकाशन	वर्ष
1. बातां री फुलवाड़ी भाग–1	विजयदान देथा	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर (द्वितीय संस्करण)	2007
2. बातां री फुलवाड़ी भाग–2	विजयदान देथा	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर (द्वितीय संस्करण)	2007
3. बातां री फुलवाड़ी भाग–3	विजयदान देथा	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर (द्वितीय संस्करण)	2007
4. बातां री फुलवाड़ी भाग–4	विजयदान देथा	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर (द्वितीय संस्करण)	2007
5. बातां री फुलवाड़ी भाग–5	विजयदान देथा	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर (द्वितीय संस्करण)	2007
6. बातां री फुलवाड़ी भाग–6	विजयदान देथा	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर (द्वितीय संस्करण)	2007

सहायक ग्रन्थ	लेखक	प्रकाशन	वर्ष
1. परम्परा	सं. नारायण सिंह भाटी	राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर	1976
2. बातां री फुलवाड़ी भाग–7	विजयदान देथा	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर	
3. राजस्थानी लोक साहित्य का विवेचन	सोहनदान चारण	राजस्थान साहित्य मंदिर जोधपुर	1980
4. राजस्थानी कहानी परम्परा विकास	अर्जुनदेव चारण	राजस्थानी साहित्य संस्थान जोधपुर	1998
5. राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन	कन्हैयालाल सहल	भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली	1958
6. लोक साहित्य विज्ञान	डॉ० सत्येन्द्र	साहित्य भवन, आगरा	
7. लोक साहित्य का अध्ययन	त्रिलोचन पाण्डेय	लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1978
8. लोक कथा विज्ञान	श्री चन्द जैन	मंगल प्रकाशन, जयपुर	1977
9. शैली	डॉ० रामचंद्र पाण्डेय	बिहारी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना	1973
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास	सं. डॉ० नगेन्द्र	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस जयपुर, द्वितीय संस्करण	1976
11. हिन्दी का प्रादेशिक लोक साहित्य शास्त्र	डॉ० नन्दलाल कल्ला	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर	2000

पत्र–पत्रिकाएँ		सम्पादक	प्रकाशित स्थान
1.	कथाक्रम	पुष्पलाल सिंह	लखनऊ
2.	मधुमती	वेदव्यास	उदयपुर
3.	गवेषणा	रामवीर सिंह	केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
4.	राजस्थान पत्रिका	गुलाब कोठारी	जयपुर

शब्द कोश		सम्पादक	प्रकाशित स्थान
1.	राजस्थान हिन्दी संक्षिप्त शब्द कोश–1	'पद्मश्री' सीताराम लालस	राजस्थान प्राच्यविद्य प्रतिष्ठान जोधपुर 1986
2.	राजस्थान हिन्दी संक्षिप्त शब्द कोश–2	'पद्मश्री' सीताराम लालस	राजस्थान प्राच्यविद्य प्रतिष्ठान जोधपुर 1987
3.	हिन्दी शब्द सागर (हिन्दी भाषा का वृहद्कोश)	श्यामसुंदर दास	काशी नागरी प्रचारिणी सभा, इलाहाबाद 1928 जोधपुर